कार्तिक–अग्रहायण 1936 नवम्बर 2014 खण्ड 26 अंक 11

डीआरडीओ समाचार

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

प्रधानमंत्री द्वारा डी आर डी ओ पुरस्कार वितरण

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और रक्षा मंत्री श्री अरुण जेटली द्वारा 20 अगस्त, 2014 को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय में आयोजित एक समारोह में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ) के वैज्ञानिकों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए पुरस्कार प्रदान किये। इस अवसर पर अपने भाषण में प्रधानमंत्री ने वैज्ञानिकों की प्रशंसा की और राष्ट्र को समर्पित उनके योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद भी दिया। आपने कहा ''हमारे वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में बहुत कठिन परिश्रम करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मानव जाति का हित होता है।'' डी आर डी ओ को ऐसे परिकल्पों पर सक्रिय रूप से कार्य करना चाहिए जिससे विश्व के लिए नया एजेंड़ा तैयार हो। आपने आह्वान किया कि हमारे पास प्रतिभा और संसाधान हैं परन्तु हमें अपना दृष्टिकोण बदलना होगा।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा किये गये योगदान की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, ''रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया है और हर वह व्यक्ति चाहे उसकी स्थिति कैसी भी हो, उसकी/उसके द्वारा किया गया योगदान प्रशंसनीय है।''

डी आर डी ओ पुरस्कार समारोह के दौरान बोलते हुए माननीय प्रधान मंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी।

डी आर डी ओ पुरस्कार समारोह के दौरान बोलते हुए माननीय रक्षा मंत्री, श्री अरूण जेटली।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन यह स्वीकार करता है कि उसके साथ जुड़े व्यक्ति, शिक्षाविदों और उद्योगों का योगदान सराहनीय है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन को उन लोगों को पुरस्कार देने के बारे में सोचना चाहिए जो इसके साथ नहीं जुड़े हैं लेकिन उनके अनुसंधानों ने रक्षा के क्षेत्र में मदद की है। इससे रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन को बाहरी शोधकर्ताओं का एक समूह (Pool) बनाने में मदद मिलेगी। आगे जोर देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि विशेष अनुसंधान और व्यावहारिक समाधानों को हल करने में उपयोगकर्ताओं के साथ बातचीत से ज्यादा सुझाव मिलेंगे। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन को देश में उन विश्वविद्यालयों की पहचान करनी चाहिए जो रक्षा के क्षेत्र में काम कर सकते

इस अंक में

- अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स), पुणे द्वारा विकसित 150 टन क्षमता वाला डैक लोडिंग बार्ज (लदान बजरा)
- एयर स्टाफ के उप प्रमुख द्वारा 'तेजस' की उड़ान
- स्थापना दिवस समारोह
- डी आर डी ओ द्वारा अपने शतायु वाले वैज्ञानिकों का सम्मान
- मानव संसाधन विकास गतिविधियाँ
- उन्नत वैमानिकी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन
- सम्पदा प्रबंधन इकाई में स्वच्छता अभियान
- डी एल आर एल द्वारा आई एस ओ 2008:9001 का पुनर्प्रमाणन
- पुरस्कार
- लेह में लद्दाखी किसान–जवान विज्ञान मेला
- कार्मिक समाचार
- खेलकूद गतिविधियां
- डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

डी आर डी ओ पुरस्कार समारोह के दौरान मंचासीन डॉ अविनाश चन्दर, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार; श्री अरूण जेटली, माननीय रक्षा मंत्री; श्री राव इन्द्रजीत सिंह, माननीय रक्षा राज्य मंत्री; एवं डॉ जी मालकोंडैया, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन)।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

हैं और अपने वैज्ञानिकों को इन विश्वविद्यालयों से संबद्ध कर देना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन से ऐसे प्रावधान बनाने के लिए आग्रह किया कि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की पाँच प्रयोगशालाओं में 35 वर्ष से कम आयु वाले वैज्ञानिकों को नेतृत्व प्रदान करे जिनमें निर्णय लेने की शक्ति हो। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन को भी छात्रों के बीच रक्षा प्रौद्योगिकियों के बारे में अधिक जागरुकता पैदा करनी चाहिए। पूरी तरह से रक्षा संबंधी विषयों के लिए समर्पित विज्ञान मेलों को आयोजित करना चाहिए। प्रधानमंत्री ने एक ऐसी प्रणाली भी विकसित करने का आग्रह किया जहाँ परियोजनाओं को समय से पहले ही पूरा किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा, ''मुझे विश्वास है कि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन में ऐसा करने की क्षमता है।''

इस अवसर पर बोलते हुए श्री अरुण जेटली ने पुरस्कार विजेताओं का बधाई दी और कहा कि पिछले पाँच दशकों से भी अधिक समय में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन भारत सरकार और भारतीयों के लिए एक स्वदेशी प्रयोगशाला के रूप में विकसित हो चुका है। संगठन की उपलब्धियों का कोई मतलब नहीं है। श्री जेटली ने कहा, ''जहाँ स्पष्ट रूप से अगले कदम का नेतृत्व करने के लिए बौद्धिक प्रतिभा उपलब्ध है और वहाँ हमारा अगला कदम रक्षा विनिर्माण के एक केन्द्र के रूप में स्वयं को स्थापित करना होगा।'' हम एक ऐसे युग में रह चुके हैं जहाँ हम आंशिक रूप से अनुसंधान करने और आंशिक रूप से विनिर्माण करने में पूरी तरह संतुष्ट थे और काफी हद तक बाहर के उपकरणों पर भरोसा करते थे। मुझे लगता है कि समीकरण धीरे–धीरे बदल रहा है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इस धीमी गति में तेजी लाने की जरूरत है, उन्होंने आगे कहा कि मुझे रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की कार्य शैली पर पूरा यकीन है। रक्षामंत्री ने बधाई देते हुए कहा, ''हमने बहुत कुछ हासिल कर लिया है और सबसे अच्छा आना अभी बाकी है''।

माननीय प्रधानमंत्री, रक्षामंत्री और पुरस्कार विजेताओं का स्वागत करते हुए रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के महानिदेशक डॉ अविनाश चन्दर ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की हालिया उपलब्धियों और उसकी रूपरेखा पर प्रकाश डाला। स्वदेशीकरण के जोर पर सरकार का अभिवादन करते हुए रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ने कहा, ''रक्षा में सच्ची आत्मनिर्भरता देश में डिजाइन के बौद्धिक अधिकार और उसके बाद के उत्पादन पर निर्भर है।'' माननीय प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि पूरी तरह से शोषण और क्षमता के दोहन तथा इसे आर्थिक रूप से

माननीय प्रधान मंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी, विभिन्न वर्गों के अंतर्गत डी आर डी ओ पुरस्कार प्रदान करते हुए।

व्यवहार्य बनाने में भारतीय रक्षा उत्पादों के लिए एक विश्वसनीय निर्यात बाजार बनाना आवश्यक है। हम 3–एस स्पीड, स्किल और स्केल को पूरा करने और इसमें 4–एस स्वदेशी को जोडने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम बाजार में प्रौद्योगिकी नेतृत्व की दिशा में भी काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस प्रयास में हम सभी हितधारकों की ओर अभिमुख होंगे कि वो हमें लक्ष्यों को प्राप्त करने और बड़े पैमाने पर राष्ट्र की आकांक्षाओं को पूरा करने में हमारी मदद करने के लिए तत्पर रहें।

समारोह में प्रदान किये गये पुरस्कार : डॉ दीपांकर बनर्जी, पूर्व मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास को डी आर डी ओ जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार; श्री ए अनन्त नारायण, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि को प्रौद्योगिकी नेतृत्व पुरस्कार; भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलूरू के एमेरिटस प्रोफेसर एस मोहन तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास, चेन्नई के प्रोफेसर वी. कामकोटि को शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार; रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद को विभिन्न तकनीकों में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए सिलिकॉन ट्राफी; रक्षा शरीरक्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान, (डिपास), दिल्ली को उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए टाइटेनियम ट्राफी, हवाई वितरण अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए डी आर ई डी), आगरा के निदेशक, डॉ एस सी सती एवं उनकी टीम, अनुसंधान एवं विकास स्थापना (इंजीनियर्स), पुणे के निदेशक, डॉ एस गुरूप्रसाद और उनकी टीम, तथा श्री आर एस चंद्रशेखर, वैज्ञानिक एफ, अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद तथा उनकी टीम को लीक से हटकर अनुसंधान/उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी विकास पुरस्कार; श्री पी एस सुब्रमण्यम, निदेशक, वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए), बैंगलूरू तथा डॉ के तामिलमणी महानिदेशक (एरो), को डी आर डी ओ उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन पुरस्कार; श्रीमती यू जया शंथी, वैज्ञानिक एफ, स्पिक, दिल्ली तथा उनकी टीम, श्री के रवि शंकर, वैज्ञानिक एफ, कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केन्द्र (केयर), बैंगलूरू तथा उनकी टीम, श्री राजीव थामन, वैज्ञानिक एफ, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली और

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

वं विकास संगठन
पुरस्कार समारोह
त 2014

उनकी टीम को सामरिक योगदान के लिए विशेष पुरस्कार, मैसर्स एकॉर्ड सॉफ्टवेयर एवं सिस्टम लिमिटेड़, बैंगलूरू, मैसर्स एयरोस्पेस इंजीनियर, सेलम, तमिलनाडु और मैसर्स कृष्णा इंडस्ट्रीज, मुम्बई को रक्षा प्रौद्योगिकी आमेलन पुरस्कार और रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला, मैसूर को रक्षा प्रौद्योगिकी स्पिन ऑफ पुरस्कार।

शाम को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन पुरस्कार समारोह के मौके पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। डॉ राजीव विज, वैज्ञानिक एफ, नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

डी आर डी ओ पुरस्कार समारोह के एक रूप में आयोजित सांस्कृति कार्यक्रम की झलकियां।

अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स), पुणे द्वारा विकसित 150 टन क्षमता वाला डैक लोडिंग बार्ज (लदान बजरा)

अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी)), पुणे ने जमीन समर्थन उपकरणों के परिवहन के लिए 150 टन क्षमता का एमवी सूर्या नामक एक लदान बजरा (डैक लोडिंग बार्ज) विकसित किया है। डा ए एम दातार, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (ए सी ई), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने 8 अगस्त 2014 को अपनी पहली यात्रा के लिए बजरा को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया।

150 टन एम वी सूर्या।

श्री आर एम जाधव, परियोजना अधिकारी; श्री अप्पावुराज, निदेशक, प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर; डॉ पी शिवकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई; डॉ एस गुरूप्रसाद, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स), पुणे एवं एमएससी, पुणे के महाप्रबंधक और परियोजना निदेशक, श्री संगम सिन्हा, एकीकृत परीक्षण परिसर, बालासोर के अपर निदेशक श्री ए त्यागराज और मैसर्स शिवा इंजीनियरिंग वर्कस, कोलकाता के श्री के के मोदी हरी झंडी समारोह (Flagging off Ceremony) के दौरान उपस्थित थे।

एयर स्टाफ के उप प्रमुख द्वारा 'तेजस' की उड़ान

एयर मार्शल एस बी पी सिन्हा अति विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट मेडल, एयर स्टाफ के उप प्रमुख ने 3 सितम्बर 2014 को बैंगलूरू में हल्का लड़ाकू विमान (एल सी ए) के ट्रेनर संस्करण तेजस को उड़ाया। इस एयरक्रॉफ्ट में अपना पहला अनुभव महसूस करते हुए एयर स्टाफ उप प्रमुख ने कहा कि विमान जमीन और हवा दोनों में अच्छी तरह से नियंत्रण कर लेता है। वह वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए), बैंगलूरू और हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लि., बैगलूरू में दो दिनों के दौरे पर थे, उस दौरान उन्होंने तेजस कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं की समीक्षा की।

एल सी ए के उड़ान परीक्षण के दौरान एयर मार्शल सिन्हा (दांये)।

एयर मुख्यालय से एयर मार्शल रैंक के एक वरिष्ठ अधिकारी का पहली उड़ान भरना सभी हितधारकों के लिए खुशी का अवसर था अर्थात वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए), हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लि. (एच ए एल), राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रयोगशाला (एन ए एल), वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र ;सेमीलेक), बैंगलूरू, महानिदेशक वैमानिकी गुणवत्ता आश्वासन (डी जी ए क्यू ए) और भारतीय वायु सेना जिन्होंने अपना ध्यान केन्द्रित किया और इस परियोजना की सफलता के लिए बड़े उपायों के साथ अपना योगदान दिया। अपनी खुशी को व्यक्त करते हुए विशिष्ट वैज्ञानिक, कार्यक्रम निदेशक (संग्राम वाहन) तथा निदेशक, वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए), श्री पी एस सुब्रमण्यम ने कहा, ''एक वरिष्ठ भारतीय वायुसेना के कमांडर द्वारा तेजस की यह उड़ान स्वदेशी हल्के लड़ाकू विमान में विश्वास पैदा करने के उच्च स्तर को इंगित करती है।''

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम

श्री मल्लेश्वर, उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए।

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम ने 27 अगस्त 2014 को अपना 45वां स्थापना दिवस मनाया। आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो जी एस एन राजू समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री एच केशी, वैज्ञानिक एफ तथा स्थापना समिति के निदेशक ने मेहमानों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों का स्वागत किया।

श्री सी डी मल्लेश्वर, निदेशक, एन एस टी एल ने अपने उद्घाटन भाषण में पिछले एक साल के दौरान प्रयोगशाला की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। शिक्षाविदों के महत्त्व पर विस्तार से चर्चा करते हुए उन्होंने उल्लेख किया कि कैसे एन एस टी एल वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आंध्र विश्वविद्यालय के साथ मिलकर काम कर रही है। प्रो राजू ने आंध्रपदेश विश्वविद्यालय के साथ एन एस टी एल के सहयोग को रेखांकित किया है और परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है। उन्होंने कर्मचारियों को आंध्रप्रदेश विश्वविद्यालय के माध्यम से ज्ञान को बढ़ाने के लिए अपनी योग्यताओं को उन्नयन करने के लिए कहा। मुख्य अतिथि ने विशाखापत्तनम के आस पास सरकारी स्कूलों में प्रथम आने वाले छात्रों को छात्रवृति से सम्मानित किया।

इस अवसर पर एक रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। मेधावी कर्मचारियों को प्रयोगशाला स्तर डी आर डी ओ पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। एन एस टी एल की प्रथम महिला, श्रीमती कमला मालिनी मल्लेश्वर ने सांस्कृतिक और खेल कार्यक्रमों के विजेयताओं को पुरस्कार वितरित किये।

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद

अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ने 27 अगस्त 2014 को अपना 26वां स्थापना दिवस मनाया। डॉ सतीश कुमार, विशिष्ट वैज्ञानिक और सी सी आर एंड डी (टी एम) रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय इस अवसर पर माननीय अतिथि थे और भर्ती तथा मूल्यांकन केन्द्र (आर ए सी), दिल्ली के अध्यक्ष, श्री डी एन रेड्डी मुख्य अतिथि थे। श्री के राम शर्मा, वैज्ञानिक जी ने अपने स्वागत भाषण में पिछले 26 वर्षों के दौरान आर सी आई की विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डाला। डॉ वी जी बोरकर, वैज्ञानिक जी, अध्यक्ष, निर्माण समिति ने आर सी आई में पिछले एक वर्ष के दौरान आयोजित विभिन्न कल्याणकारी गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा दिया।

अपने संबोधन में डॉ सतीश कुमार ने वर्ष के दौरान सफल उड़ान परीक्षण के लिए आर सी आई के प्रयासों की सराहना की और प्रक्षेपण परियोजनाओं को समय रहते पूरा करने के पर बल दिया। डॉ रेड्डी ने आर सी आई को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के हवाई हब के रूप में विकसित करने के लिए आग्रह किया। उन्होंने वैज्ञानिकों को अपने क्षेत्रों में काम करने के लिए उच्च योग्यता प्राप्त करने की जरूरत पर बल दिया। उत्कृष्ट वैज्ञानिक और आर सी आई के निदेशक, डॉ जी सतीश ने अपने संबोधन में आर सी आई में विभिन्न प्रक्षेपास्त्र परियोजनाओं के तीव्र विकास के लिए सुविधाओं का सबसे अच्छा अनुप्रयोग करने के लिए वैज्ञानिकों और कर्मचारियों का आह्वान किया। उन्होंने आर सी आई में पिछले 26 वर्षों के दौरान प्रौद्योगिकी और कल्याणकारी दोनों ही उपायों के क्षेत्र में विकास की पूरी तस्वीर को प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर आर सी आई के मेधावी कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। आर सी आई परिवार के बच्चों को उत्कृष्टता और कल्याण छात्रवृत्ति भी प्रदान की गयी। अनुसंधान केन्द्र इमारत की प्रथम महिला श्रीमती पदमावती सतीश रेड्डी ने वार्षिक समारोह के हिस्से के रूप में आयोजित विभिन्न खेल प्रतियोगताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये। श्री जी कृष्णा राव, वैज्ञानिक जी ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

डी आर डी ओ द्वारा अपने शतायु वाले वैज्ञानिक का सम्मान

डी आर डी ओ द्वारा देश के स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर द्वितीय विश्वयुद्ध के साक्षी, स्वतंत्रता सेनानी, औपनिवेशिक शासन से भारत को एक गणराज्य में परिवर्तित करने में योगदान देने वाले वयोवृद्ध वैज्ञानिक, श्री बृजलाल परती का आयुध अनुसंधान एवं विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे में आयोजित विधिपूर्ण समारोह में सम्मान किया गया।

श्री भट्टाचार्य (बांये), श्री दातार (बांये से तीसरे) एवं श्री कुलकर्णी, श्री परती को सम्मानित करते हुए।

श्री परती जो 100 वर्षों की आयु वाले विशिष्ट क्लब में शामिल हो चुके हैं, को दिनांक 11 अगस्त 2014 को रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, सचिव, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के महानिदेशक, डॉ अविनाश चन्दर एवं श्री अनिल एम दतार, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (ए सी ई) द्वारा बधाई संदेश और सम्मान प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया। आयुध अनुसंधान एवं विकास स्थापना के श्री रोहन कुलकर्णी, पुणे स्थित डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं में सबसे कम उम्र के वैज्ञानिक ने उन्हें एक स्मृति चिन्ह भेंट किया।

श्री बृजलाल परती।

11 अगस्त 1914 को पंजाब के पटियाला में जन्मे श्री बृजलाल परती ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से विज्ञान के क्षेत्र में परास्नातक की डिग्री हासिल की। वह 1939 में कानपुर स्थित एक रक्षा प्रयोगशाला (जो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के स्वामित्व में आई) में शामिल हो गये और 1972 में अपनी सेवानिवृति से पहले वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी ग्रेड I के रूप में समर्पित सेवा के 33 वर्ष पूरे कर लिये।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री परती ने कहा कि कड़ी मेहनत के लिए कोई विकल्प नहीं है। अपने काम के प्रति जोश और प्रतिबद्धता की भावना होनी चाहिए। यह तभी संभव है जब आप एक अनुशासित जीवन व्यतीत करें। उन्होंने एक व्यक्ति के विकास में परिवार के महत्त्व पर बल दिया और परिवार की उपेक्षा न करने की सलाह दी क्योंकि परिवार ही जीवन का एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ होता है।

उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे के निदेशक डॉ के एम राजन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं अनुसंधान एवं विकास स्थापना (इंजीनियरिंग) के निदेशक डॉ एस गुरूप्रसाद, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल) के निदेशक श्री विकास भट्टाचार्य और रियर एडमिरर एवं सैन्य प्रशिक्षण संस्थान (एम आई एल आई टी) के निदेशक, श्री ए एस सेठी ने समारोह में भाग लिया।

आभार

डी आर डी ओ समाचार का सम्पादक मंडल वर्ष भर नियमित रूप से प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से संबंधित समाचार भेजने के लिए सभी संवाददाताओं, राजभाषा अधिकारियों, तथा प्रबुद्ध निदेशकगणों का आभार व्यक्त करता है।

सम्मेलन/सेमिनार/विचार–गोष्ठी/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम/बैठक

सुरक्षा संवेदीकरण कार्यक्रम

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरू ने सतर्कता एवं सुरक्षा निदेशालय, नई दिल्ली, के साथ साथ इंटेलीजेन्स ब्यूरो, नई दिल्ली और बैंगलूरू के साथ भी 14 जुलाई 2014 को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के लिए सुरक्षा संवेदीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया। बैंगलूरू, चैन्नई और मैसूर में स्थित 14 रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन प्रयोगशालाओं/इकाइयों/प्रतिष्ठानों से 106 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

श्री पी श्रीकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, ए डी ई ने प्रतिभागियों का स्वागत कया। डॉ के तमिलमणि, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (ऐरो) ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इंटेलीजेंस ब्यूरो के अपर निदेशक, डॉ आनन्द कुमार ने उद्घाटन भाषण दिया। कर्नाटक और दक्षिणी क्षेत्रों से संबंधित प्रचलित राष्ट्रीय और स्थानीय सुरक्षा परिदृश्य, रक्षा स्थापनाओं के लिए बहुआयामी खतरे, जासूसी गतिविधियाँ, विदेशियों के साथ काम करते हुए सावधानियाँ, साइबर सुरक्षा, बम और आई ई डी, दस्तावेज और व्यक्तिगत सुरक्षा और आकस्मिक योजनाओं जैसे विभिन्न सुरक्षात्मक विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिये गये।

सुरक्षात्मक व्ययाख्यानों के साथ एक दिवसीय संवेदीकरण कार्यक्रम सतर्कता और सुरक्षा कवर को सुनिश्चित और मजबूत करने की दिशा में एक अच्छा कदम था और सभी मेहमानों और प्रतिभागियों ने इसकी बहुत सराहना की थी।

विश्वसनीय प्रणाली और सत्यापन पर सतत् शिक्षा कार्यक्रम

18–22 अगस्त 2014 के दौरान कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केन्द्र (केयर), बैंगलूरू ने भरोसेमंद प्रणाली डिजाइन और सत्यापन पर सतत् शिक्षा कार्यक्रम (सी ई पी) पाठ्यक्रम का आयोजन किया। श्री फिलिप अब्राहम, वैज्ञानिक एफ और पाठ्यक्रम निदेशक ने पाठ्यक्रम का उद्देश्य समझाया और विभिन्न आपरेटिंग प्रणाली आर्किटेक्चर की जानकारी दी तथा सुरक्षा शोधकर्ताओं ने भरोसेमंद प्रणाली के निर्माण के लिए सुरक्षा नीति के मॉडल की सिफारिश की। निम्न विषयों को शामिल किया गया है: सुरक्षित सॉफ्टवेयर प्रणाली एवं विश्वसनीय प्रणाली, विश्वास की नींव, विरोधी मॉडल, सुरक्षा नीति मॉडल, कन्फाइनमेन्ट, वर्चुअल मशीनों आदि के लिए संरचना।

कार्यालय स्वचालन और ओपन कार्यालय उन्मुखीकरण पर सतत् शिक्षा कार्यक्रम

4–8 अगस्त 2014 के दौरान रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली द्वारा आफिस आटोमेशन और ओपन आफिस उन्मुखीकरण पर एक सतत् शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभिन्न प्रयोगशालाओं से डी आर टी सी/प्रशासनिक संबद्ध कैडर के 23 रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के कर्मियों ने भाग लिया जो डेस्कटॉप उपयोगकर्ता रहे हैं और कार्यालय स्वचालन की प्रक्रिया में योगदान देते आ रहे हैं। विन्डो प्लेटफार्म से लिनिक्स आपरेटिंग प्रणाली पर स्थानान्तरण करने के उददेश्य से पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था। विशिष्ट क्षेत्रों में आन्तरिक और बाहरी दोनों ही विशेषज्ञों द्वारा लिनक्स, आफिस ऑटोमेशन सूट, फाइलें, निर्देशिका प्रबंधन, नेटवर्किंग और विभिन्न व्यवस्थापक और डेस्कटॉप उपकरणों की आवश्यकता पर सैद्धान्तिक और व्यवहारिक सत्रों का आयोजन किया गया। डॉ उपदेश कुमार, वैज्ञानिक एफ, पाठ्यक्रम निदेशक जबकि सुश्री स्वाति जौहर, सी वैज्ञानिक, पाठ्यक्रम संयोजक थे।

मनोवैज्ञानिक परामर्श में प्रशिक्षण कार्यक्रम

रक्षा मनौवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली के डॉ उपदेश, वैज्ञानिक एफ के मार्गदर्शन में 14 जुलाई 2014 से 1 अगस्त 2014 तक भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना और सीमा सुरक्षा बल के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए मनोवैज्ञानिक कांउसिलिंग में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया था। भारतीय सेना के अनुशासन और सतर्कता निदेशालय द्वारा समन्वित यह प्रशिक्षण कार्यक्रम माननीय रक्षामंत्री के निर्देशों पर आयोजित किया जा रहा है। मेजर से कर्नल रेंक के भारतीय सेना के 29 अधिकारियों, विंग कमांडर रैंक के वायु सेना के 5

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

मनोवैज्ञानिक परामर्श पर सतत् शिक्षा कार्यक्रम के प्रतिभागीगण।

अधिकारियों और उप कमांडेट रैंक के सीमा सुरक्षा बल के 10 अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

विभिन्न संस्थाओं के विशेषज्ञ वक्ताओं, शिक्षाविदों और अस्पतालों ने प्रतिभागियों के साथ ज्ञानवर्धक वार्ताओं और व्यवहारिक सत्र संचालन के माध्यम से अपने ज्ञान और विशेषज्ञता को साझा किया। पंतजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार के उपकुलपति ब्रिगेडियर (सेवानिवृत्त) करतार सिंह ने समापन भाषण दिया। रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली द्वारा सफलतापूर्वक आयोजित यह 7वां कार्यक्रम था। अब तक 225 से अधिक अधिकारियों को मनोवैज्ञानिक परामर्श (काउंसिलिंग) में प्रशिक्षित किया गया है। कार्यक्रम का संयोजन डॉ अर्चना, वैज्ञानिक डी द्वारा किया गया।

उन्नत सामग्रियों पर संगोष्ठी

30 अगस्त 2014 को रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), खड़कपुर के सहयोग से एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में डी एल, जोधपुर और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जोधपुर से 33 प्रतिभागियों ने भाग लिया। रक्षा प्रयोगशाला के निदेशक डॉ एस आर बडेरा और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जोधपुर के निदेशक प्रोफेसर सी वी आर मूर्ति ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और संगोष्ठी की आवश्यकता और उद्देश्य को विस्तारपूर्वक समझाया। संगोष्ठी का मुख्य लक्ष्य उन्नत सामग्री के उन्नत सामग्री के क्षेत्र में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के साथ संयुक्त सहयोगी परियोजनाओं की संभावनाओं का पता लगाना था।

वक्ताओं ने भारतीय प्रौद्यौगिकी संस्थान और रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर में चल रही गतिविधियों पर चर्चा की और अपने कार्यों से संबंधित क्षेत्रों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्यों पर प्रकाश डाला। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जोधपुर और रक्षा प्रयोगशाला जोधपुर पर उपलब्ध तकनीकी बुनियादी सुविधाओं का उपयोग करते हुए संभव सहयोगात्मक कार्यों पर चर्चा की गयी।

मेटलेब पर कार्यशाला

5 अगस्त 2014 को रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर द्वारा मैसर्स मैथवर्क इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली के सहयोग से मेटलेब पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के दौरान वास्तविक दुनिया मामले के अध्ययन का उपयोग करते हुए निम्न विषयों पर प्रदर्शन सत्रों का आयोजन किया गयाः एक सॉफ्टवेयर मॉडल के लिए गणितीय अवधारणाओं का उपार्जन, पैरामैट्रिक समीकरण के साथ और बिना पैरामीट्रिक फिटिंग फील्ड

डाटा, अनुकूलित सारणी के रूप में वास्तविक दुनिया डाटावेस का उदाहरण आदि।

समय और आवृति डोमेन में इंपोर्ट और विजुलाइज्ड संकेतों, वर्णक्रम विश्लेषणों के लिए एफ एफ टी गणना करने, तरंगिका विश्लेषण प्रदर्शनों और डिजाइन डिजिटल फिल्टर्स, एक कैमरे से जीवंत वीडियो द्वारा चेहरे का पता लगाना, कैमरे की जाँच करना, वस्तुओं की जाँच और पता करना और डिजाइन और बेतार संचार प्रणालियों के लिए आर एफ ट्रांसीवर्स सत्यापित करने के लिए एक व्यवहारिक जीवंत प्रदर्शन भी आयोजित किया गया।

21वां ताम्हनकर स्मृति व्याख्यान

ताम्हनकर स्मृति व्याख्यान के उद्घाटन अवसर पर डॉ कोटा हरिनारायण (बांये से तीसरे) के साथ डॉ अमोल गोखले (बांये से दूसरे)।

28 जुलाई 2014 को रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद और भारतीय प्रबंध संस्थान (आई आई एम), हैदराबाद चैप्टर द्वारा 21वां ताम्हनकर स्मृति व्याख्यान आयोजित किया गया। डॉ कोटा हरिनारायण, अध्यक्ष, डॉ डी एस कोठारी रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए), बैंगलूरू और हैदराबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति ने विमानन में सामग्री की भूमिका बदलने के बारे में व्याख्यान दिया। डॉ जी मालकोंडैया, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास (मानव संसाधन), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय विशेष अतिथि थे।

उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा डी एम आर एल के निदेशक तथा भारतीय प्रबंधन संस्थान (आई आई एम), हैदराबाद चैप्टर के अध्यक्ष, डॉ अमोल ए गोखले ने अपने स्वागत भाषण में डॉ आर वी ताम्हनकर की पेशेवर उल्पब्धियों के साथ–साथ उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उनका जैव स्केच प्रस्तुत किया। आर सी एम ए (सामग्री) के क्षेत्रीय निदेशक तथा आई आई एम, हैदराबाद चैप्टर के उपाध्यक्ष, श्री एन ईश्वर प्रसाद ने वक्ताओं का परिचय करवाया और विभिन्न सामरिक परियोजनाओं में उनके योगदान पर प्रकाश डाला।

डॉ कोटा हरिनारायण ने विमान सामग्री के इतिहास के वृतांत से अपनी बात शुरू की और विमानन क्षेत्र के लिए सामग्री के स्वदेशीकरण की दशा में देश की प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने देश की उत्पादन क्षमता और वितरण में मजबूती व वृद्धि करने और भावी विमामन कार्यक्रम में उन्नत धातुओं, कंपोजिट तथा IVHM/SHM जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने की सलाह दी।

युवा वैज्ञानिकों के लिए संगोष्ठी

युवा वैज्ञानिकों के लिए संगोष्ठी के दौरान श्री वी सुंदरराजन (दांये)।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरू ने 2 अगस्त 2014 को युवा वैज्ञानिकों के लिए 20वीं संगोष्ठी का आयोजन किया। जी टी आर ई के पूर्व निदेशक और औद्योगिक उत्कृष्ट समूह, क्वेस्ट, के वर्तमान प्रमुख, श्री वी सुन्दरराजन ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नेतृत्व के गुणों व आजीविका की संभावनाओं पर उत्प्रेरक विचार प्रस्तुत किये। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के रहस्यों को उजागर करते हुए उन्होंने समझाया कि विज्ञान प्राकृतिक दुनिया को समझने के लिए है और प्रौद्योगिकी नवाचार के माध्यम से परिवर्तन लाने के लिए है। जी टी आर ई की श्रीमती एस गंगा भवानी, वैज्ञानिक सी ने कावेरी इंजन के स्ट्रेन गेज इंस्ट्रूमेन्टेशन पर व्याख्यान दिया। उन्होंने समझाया कि किस प्रकार उच्च गति और उच्च तापमान घूमण घटकों से गतिशील तनाव उपायों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न चुनौतियों को परास्त किया जाता है।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के विकास पर सतत् शिक्षा कार्यक्रम

डॉ शर्मा, कोमोडोर (सेवानिवृत्त) पटेल, एवं डॉ आर पी त्रिपाठी, पाठ्यक्रम सामग्री जारी करते हुए (बांये से दांये)।

16–17 जुलाई 2014 को नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली के गुणवत्ता, विश्वसनीयता और सुरक्षा (क्यू आर एस) प्रकोष्ठ द्वारा आई एस ओ 9001:2008 के माध्यम से गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के विकास पर एक सतत् शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया। आई एस ओ 9001:2008 के तहत इस पाठ्यक्रम की योजना विशेष रूप से कार्यान्वयन और गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली की निगरानी में लगे कर्मियों के लिए बनायी गयी है। पूरे भारत से 17 रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन प्रयोगशालाओं/प्रतिष्ठानों से 40 प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया। पाठ्यक्रम निदेशक जी वैज्ञानिक डॉ राकेश कुमार शर्मा ने नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), की गुणवत्ता, विश्वसनीयता और सुरक्षा (क्यू आर एस) गतिविधियों की समीक्षा की और पाठ्यक्रम संयोजक विशिष्ट वैज्ञानिक डॉ हिमांशू ओझा ने पाठ्यक्रम की जानकारी दी।

डॉ आर पी त्रिपाठी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, नाभकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास) के ने स्वागत भाषण दिया और सशस्त्र बलों में अंतरराष्ट्रीय मानक के अनुसार उत्पादों और सेवाओं के विकास को सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली की आवश्यकता पर बल दिया। गुणवत्ता, विश्वसनीय और सुरक्षा, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय के निदेशक, मुख्य अतिथि, कमान (सेवानिवृत) सरोज कुमार पटेल ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय द्वारा उठाये गये गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली की कार्यक्षमता और पहल को लागू करने, गुणवत्ता, विश्वसनीयता और सुरक्षा (क्यू आर एस) के क्षेत्र में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के कर्मचारियों के प्रशिक्षण की जरूरतों को पूरा करने के लिए गुणवत्ता के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

पुस्तकालय पेशेवरों के लिए अभिनय और उभरती प्रौद्योगिकियों पर कार्यशाला

पाठ्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर डॉ आर पी त्रिपाठी, डॉ सतीश कुमार एवं डॉ विज (दांये से बांये)।

4 से 8 अगस्त 2014 के दौरान नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली द्वारा पुस्तकालय पेशेवरों के लिए उन्नयन एवं उभरती प्रौद्योगिकियों पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ सतीश कुमार, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास (टी एम), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। डॉ आर पी त्रिपाठी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, इनमास ने स्वागत किया। डॉ राजीव विज, पाठ्यक्रम निदेशक ने कार्यशाला की आवश्यकता तथा उददेश्य के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी।

कार्यशाला का उद्देश्य उपयोगकर्ताओं के लाभ के लिए नवीन और उभरती प्रौद्योगिकियों के विकास पर जोर देने के साथ साथ पुस्तकालय पेशेवरों और प्रकाशकों के बीच तालमेल को बढ़ावा देना था। कार्यशाला में डिजीटल लाईब्रेरी के क्षेत्र में भावी एल आई एस आवश्यकताओं और अनुसंधान, भागीदारी सदस्यता, साहित्यक चोरी, ज्ञान प्रबंधन, खुले लाइसेन्स और डाटा नीति आदि पर विचार–विमर्श किया गया।

पुस्तकायलय और सूचना विज्ञान में रुझानों का आकलन करने के लिए सुप्रसिद्ध विशेषज्ञों द्वारा 22 आमंत्रित वार्ताओं का आयोजन किया गया। विभिन्न अनुसंधान एवं विकास संस्थानों, उद्योग एवं शैक्षणिक समुदायों से 109 से अधिक राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने कार्यशाला में भाग लिया। एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें

13 औद्योगिक भागीदारों ने भाग लिया और राज्यों के अत्याधुनिक एल आई एस उत्पादों और सेवाओं का प्रदर्शन किया गया। नवीन कुमार सोनी, वैज्ञानिक सी, पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

रासायनिक हथियारों के खिलाफ सहायता और सरंक्षण में क्षेत्रीय बुनियादी पाठ्यक्रम

डॉ आर पी त्रिपाठी, उद्घाटन समारोह में बोलते हुए।

राष्ट्रीय प्राधिकरण रासायनिक हथियार कन्वेंशन (एन ए सी डब्ल्यू सी), मंत्रिमंडल सचिवालय, भारत सरकार और रासायनिक हथियार निषेध संगठन (ओ पी डब्ल्यू सी), हैग, नीदरलैण्ड, नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली, रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डी आर डी ई) ग्वालियर के तत्वावधान में 25 से 29 अगस्त 2014 के दौरान रासायनिक हथियारों के खिलाफ सहायता और सरंक्षण में क्षेत्रीय बुनियादी पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय प्राधिकरण रासायनिक हथियार कन्वेंशन के अध्यक्ष, डॉ सतीश बी अग्निहोत्री समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रो (डॉ) मानस के मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (जीव विज्ञान), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, ने मुख्य संबोधन दिया।

अफगानिस्तान, बहरीन, बंग्लादेश, भूटान, कम्बोडिया, मालद्वीप, मलेशिया, फिलीपींस, कतर, सउदी अरब, श्रीलंका, वियतनाम, राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार, राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड, रासायनिक, जैविक, रेडियोधर्मी और परमाणु संरक्षण (सी बी आर एन), सी एम ई, पुणे, राष्ट्रीय आपदा कार्यवाही बल, आंध्र प्रदेश, आफिस और सी बी आर एन पी पी, रक्षा मंत्रालय, विशेष सुरक्षा समूह, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन और राष्ट्रीय प्राधिकरण रासायनिक हथियार कन्वेंशन के प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया। विभिन्न रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन प्रतिष्ठानों के संकायों, डी आई जी, एन डी आर एफ और डी एम आई, भोपाल के निदेशक ने भी रिसोर्स व्यक्ति के रूप में भाग लिया। इस पाठ्यक्रम ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के लिए अभिज्ञान, सुरक्षा, परिशोधन और चिकित्सा प्रबंधन सहित रासायनिक रक्षा प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने का एक अवसर प्रदान किया है।

25–27 अगस्त 2014 के दौरान होटल ताज मानसिंह, दिल्ली में व्याख्यान और प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया। नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास) में दो संवादमूलक सत्रों का आयोजन किया गया जिनमें रासायनिक हथियारों से हताहत होने पर चिकित्सा प्रबंधन और परिशोधन प्रौद्योगिकी के प्रदर्शनों और व्याख्यानों पर ध्यान दिया गया। इनमास में आयोजित पाठ्यक्रम की खासियत धारण करना और छोड़ने का अभ्यास, कनस्तर चैजिंग ड्रिल, आपदा के समय घायलों के इलाज की वरीयता का निर्धारण का अभ्यास, मानव रोगी अनुकारी प्रशिक्षण, हैजमेट प्रतिक्रियाएँ और कृत्रिम अभ्यास आदि पाठ्यक्रम के मुख्य आकर्षण थे। विशेष

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

आइ सी टी आधारित सी बी आर एन प्रशिक्षण तकनीकों और मानव रोगी अनुकारी सुविधाओं का भी प्रदर्शन किया गया। डॉ राकेश शर्मा, वैज्ञानिक जी, पाठ्यक्रम निदेशक जबकि श्री विनोद कुमार, वैज्ञानिक ई, पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

परियोजना प्रबंधन प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

डॉ भुजंग राव, दीप प्रज्ज्वलित कर पाठ्यक्रम का उद्घाटत करते हुए।

28 जुलाई 2014 से 8 अगस्त 2014 तक प्रौद्योगिक प्रबंधक सस्थान (आई टी एम), मसूरी ने द्वितीय आई पी एम ए, डी स्तर के पाठ्यक्रम का आयोजन किया। पाठ्यक्रम का उददेश्य बी और सी वैज्ञानिकों को समयबद्ध अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं में उन्हें प्रभावी योगदान देने को तैयार करने के उद्देश्य से परियोजना प्रबंधन और इसके विभिन्न उपकरणों एवं तकनीकों के मूल सिद्धांतों के साथ परिचित करवाना था।

पाठ्यक्रम का आयोजन परियोजना प्रबंधन सहायक (पी एम ए), इंडिया के सहयोग से किया गया था। डॉ वी भुजंग राव, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एन एस एंड एम), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा इसका उद्घाटन किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ भुजंग राव ने परियोजनाओं पर काम करने वाले रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के वैज्ञानिकों के लिए इस प्रकार के पाठ्यक्रम के महत्त्व पर बल दिया।

अंतस्थापित (Embadded) प्रणाली पर सतत् शिक्षा कार्यक्रम

18–22 अगस्त 2014 के दौरान अनुसंधान एवं विकास स्थापना (इंजी), पुणे द्वारा एम्बेडेड प्रणाली पर एक सतत् शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पाठ्यक्रम में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ एस गुरू प्रसाद उत्कृष्ट वैज्ञानिक निदेशक, अनुसंधान एवं विकास स्थापना (इंजी.) ने उद्घाटन भाषण दिया। पाठ्यक्रम की शुरूआत माइक्रोप्रोसेसर संरचना विकास के इतिहास और 8051 संरचनाओं के एक संक्षिप्त पुनरीक्षण के साथ की गयी। प्रशिक्षण में ए आर एम 7 संरचना और प्रोग्रामिंक को विस्तार से समझाया गया। एमबैडैड लिनक्स के साथ एंबैडैड लिनक्स निर्माण और ए आर एम एंबैडैड लिनक्स के साथ एकल बोर्ड कम्प्यूटर पर अनुप्रयोग विकास को भी सविस्तार प्रस्तुत किया गया।

प्रशिक्षकों/उत्तरदाताओं के लिए सी बी आर एन कमान पाठ्यक्रम

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन और आफिस ऑफ सिक्योरिटी एंड काउंटर टेरेरिज्म (ओ एस सी टी) गृह मंत्रालय ब्रिट्रेन के बीच चल रहे एक सहमति पत्र के तहत नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली द्वारा पुलिस राष्ट्रीय सी बी आर एन केन्द्र, रायटन बिट्रेन के साथ सक्रिय सहयोग से

अंतस्थापित प्रणाली पर सतत् शिक्षा कार्यक्रम के प्रतिभागीगण।

प्रशिक्षकों/उत्तरदाताओं के लिए दो निरन्तर सी बी आर एन कमान पाठ्यक्रम क्रमशः 6–10 अक्तूबर, 2014 और 13–17 अक्तूबर, 2014 को आयोजित किया गया।

डॉ राकेश कुमार शर्मा, वैज्ञानिक जी तथा अपर निदेशक, सी बी आर एन रक्षा डिवीजन, पाठ्यक्रम निदेशक तथा डॉ रमन चावला, वैज्ञानिक डी, पाठ्यक्रम समन्वयक थे। यूनाइटेड किंगडम (यू.के) के श्री माइकल फ्रांसिस होआरे, श्री स्टीव तिलिंग और श्री बर्नी हिगिंस आमंत्रित संकाय थे।

देश के 14 सी बी आर एन हितधारक संस्थानों से 118 प्रतिनिधियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया। पाठ्यक्रम का उददेश्य सी बी आर एन के प्रशिक्षकों/उत्तरदाताओं के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना था।

हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस का आयोजन

हिंदी दिवस के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करती हुई निदेशक, डॉ टेसी थॉमस साथ में मुख्य अतिथि प्रो. शुभदा वांजपे एवं सह–निदेशक डॉ. आर के गुप्ता।

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद में 01 सितंबर 2014 से 15 सितंबर 2014 तक हिंदी पखवाड़ा तथा 15 सितंबर,2014 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. शुभदा वांजपे, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद; डॉ टेसी थॉमस, निदेशक, ए एस एल; डॉ आर के गुप्ता, सह–निदेशक, ए एस एल एवं श्री खलाणे संजय आनंदराव, राजभाषा अधिकारी मंच पर उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं श्रीमती के उमा, वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक द्वारा सरस्वती वंदना के साथ हुआ। श्री किरण केसकर, वरिष्ठ सहायक (हिंदी) ने रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ अविनाश चंदर जी का संदेश पढ़ा। श्री खलाणे संजय आनंदराव, राजभाषा अधिकारी ने पिछले एक वर्ष में उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला के हिंदी कक्ष की गतिविधियों का ब्यौरा दिया।

मुख्य अतिथि प्रो. शुभदा वांजपे ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमारा राष्ट्र 14 सितंबर को पावन पर्व के रूप में हिंदी दिवस मनाता है। यह हमारे राष्ट्र के लिए गौरव की बात है किंतु इसके साथ ही हमें हिंदी के प्रचार–प्रसार का दायित्व भी पूर्ण निष्ठा के साथ निभाना है। हमें अंग्रेजी की मानसिकता छोड़नी होगी क्योंकि मातृभाषा परिवार को जोड़ती है तथा राष्ट्रभाषा राष्ट्र को जोड़ती है।

सह–निदेशक, डॉ आर के गुप्ता ने कहा जब रूस, जापान, फ्रांस, जर्मनी आदि देश अपनी मातृभाषा का प्रयोग करके व्यापार, तकनीकी आदि क्षेत्रों में उन्नति कर सकते हैं तो हम क्यों नहीं?

ए एस एल की निदेशक, डॉ टेसी थॉमस ने कहा कि हिंदी को एक दिन हिंदी दिवस या पंद्रह दिन पखवाड़े के दौरान प्रयोग करके भूलना नहीं है, बल्कि संपूर्ण वर्ष दैनिक कामकाज में इसका प्रयोग करना है। रोजगार के नये अवसर हिंदी भाषा का प्रयोग करके उपलब्ध कराये जा सकते हैं। स्वदेशी तकनीक को बढ़ाया जा सकता है।

पखवाड़े के दौरान 09 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जैसे–निबंध लेखन प्रतियोगिता, श्रुतलेखन प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, टंकण प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, गायन प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, स्मरण शक्ति प्रतियोगिता एवं अंत्याक्षरी प्रतियोगिता। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को हिंदी दिवस के अवसर पर पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन श्री पीयूश जोशी, भंडार सहायक ए ने किया। अंत में श्री किरण केसकर, वरिष्ठ सहायक (हिंदी) के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन हुआ।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

उन्नत वैमानिकी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

सम्मेलन स्मारिका का विमोचन करते हुए डॉ शेखरन, श्री एम वैंकेया नायडू, डॉ अविनाश चन्दर, एवं डॉ सतीश रेड्डी (बांये से दांये)।

अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ने 25–26 अगस्त, 2014 के दौरान उन्नत वैमानिकी (आई सी सी ए–2014) पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। माननीय ग्रामीण विकास, शहरी विकास, आवास और शहरी गरीबी उन्मूलन और संसदीय मामले मंत्री, श्री एम वेंकैया नायडु उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे। रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, सचिव, रक्षा एवं विकास विभाग और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के महानिदेशक, डॉ अविनाश चंदर तथा विशिष्ट वैज्ञानिक और महानिदेशक (मिसाइल और सामरिक प्रणाली), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन इस अवसर पर उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों में से मौजूद थे।

उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा अनुसंधान केन्द्र इमारत के निदेशक, डॉ जी सतीश रेडडी ने विशिष्ट व्यक्तियों का स्वागत किया और आर सी आई की तकनीकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने आई सी सी ए की समीक्षा करते हुए कहा कि (आई सी सी ए–2014) के दौरान सैंसर्स के क्षेत्रों में नये घटनाक्रम, जिज्ञाशु (Seekers), माइक्रो इलैक्ट्रो मैकेनीकल प्रणाली (एम ई एम एस), जाइरोज (Gyros) और नियंत्रण प्रणाली विचार विमर्श के लिए एक आदर्श मंच की स्थापना करेंगे।

डॉ वी जी शेखरन ने विभिन्न प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रमों की सफलता के लिए आर सी आई के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने प्रक्षेपास्त्रों के वर्तमान और भावी निर्माण को समय से पूरा करने के लिए बेहतर अनुसंधान और विकास प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ अविनाश चन्दर ने अनुसंधान केन्द्र इमारत के विजन दस्तावेज को जारी किया और 2020 तक सामरिक और रणनीतिक प्रक्षेपास्त्रों की सफलता के लिए आत्मनिर्भरता पर जोर दिया। उन्होंने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की विभिन्न नयी परियोजनाओं की उन्नति और रक्षा अनुसंधान एवं विकास के सभी क्षेत्रों की भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला।

श्री एम वेंकैया नायडु ने अनुसंधान केन्द्र इमारत को प्रक्षेपास्त्र अनुसंधान एवं विकास के सभी क्षेत्रों में उसके योगदान के लिए बधाई दी और उन्नत वैमानिकी क्षेत्र में नये लक्ष्य तय करने के लिए आवाह्न किया। श्री नायडु ने सम्मेलन की स्मारिका जारी की और एक फोटो चित्रशाला तथा औद्योगिक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों द्वारा नौपरिवहन, नियंत्रण एवं मार्गदर्शन, आई आर सैंसर्स, इमेजिंग, आर एफ प्रणाली, एम ई एम एस, एन ई एम एस, जैव प्रेरित सैंसर्स, बिजली की आपूर्ति आदि विभिन्न क्षेत्रों पर 23 वार्ताएँ प्रस्तुत की गयीं। स्टैनफोर्ड, मैकगिल, एम आई टी, एडिनबर्ग, स्टैथक्लाइड, नासा, आई ए आई, इजरायल, सागेम, फ्रांस, सेनेर स्पेन, मार्च माइक्रावेव नीदरलैण्ड, ए जी ए टी रूस, ए एस बी फ्रांस, रॉकहीड मार्टिन अमेरिका, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन और भारतीय उद्योगों के विश्व प्रसिद्ध प्रतिष्ठानों के विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिये गये। सम्मेलन में पैनल चर्चा की गई, रक्षामंत्री के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार, श्री वी के सारस्वत ने जिसकी अध्यक्षता की। 1000 से अधिक प्रतिभागियों ने सम्मेलन में भाग लिया।

द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

सूचना प्रौद्योगिकी: कल, आज, और कल

फरवरी 2015, दिल्ली, भारत

Bilingual International Conference

Information Technology: Yesterday, Today, and Tomorrow

February 2015, Delhi, India

मुख्य संरक्षक : डॉ अविनाश चंदर, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं महानिदेशक रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन

Chief Patron : Dr. Avinash Chander, SA to RM, Secretary, Defence R&D, and DG, DRDO

संरक्षक : डॉ जी मालकोंडय्या, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन)

Patron : Dr. G Malakondaiah, DS and CC R&D (HR)

सम्मेलन का उद्देश्य

सूचना प्रौद्योगिकी: कल आज और कल नामक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्देश्य अकादमिकगणों, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, तथा विद्वानों के मध्य परस्पर विचार-विमर्श, उनके द्वारा किए गए शोध पर परिचर्चा, तथा नवीन विधाओं का सृजन है। इस सम्मेलन से बहुआयामी शोधपरक विचारों का सृजन, अद्यतन प्रौद्योगिकियों की समालोचना, प्रौद्योगिकीय अनुप्रयोग में आने वाली व्यावहारिक चुनौतियां, सामाजिक सरोकारों, तथा नवीन शोध की दिशाएं स्थापित होंगी।

Conference Objective

The International Conference on Information Technology: Yesterday, Today, and Tomorrow; aims to bring together leading academicians, scientists, researchers, and research scholars to exchange and share their experiences, and research results about all aspects of information technology. It also provides the premier interdisciplinary forum for researchers, practitioners and educators to present and discuss the most recent innovations, trends, concerns, practical challenges encountered, and the solutions adopted in the field of information technology.

Important Dates

Conference Dates: Second half of February 2015

Paper submissions

Full paper submission: 15 December 2014

Notification of acceptance: 31 December 2014

Organising centre : Defence Scientific Information & Documentation Centre (DESIDOC) DRDO, Metcalfe House Delhi-110054

महत्वपूर्ण तिथियां

सम्मेलन की तिथियां : फरवरी 2015 के दूसरे पखवाड़े में पूर्ण

आलेख प्राप्त करने की अंतिम तिथि : 15 दिसम्बर 2014

सम्मेलन हेतु आलेख के चयन की सूचना : 31 दिसम्बर 2014

आयोजक: रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केन्द्र (डेसीडॉक), डी आर डी ओ, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054

संपर्क

श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक

श्री फूलदीप कुमार, प्रमुख, डिजिटल संग्रह, विज्ञान संचार, तथा राजभाषा प्रभाग

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केन्द्र (डेसीडॉक), मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054

दूरभाष: 011-23902530, 31 ई-मेल: director@desidoc.drdo.in, itconf2015@gmail.com

Contact

Shri Suresh Kumar Jindal, Director, DESIDOC

Shri Phuldeep Kumar, Head, Digital Archieve, Science Communication, and Official Language Division

Defence Scientific Information & Documentation Centre (DESIDOC), DRDO, Metcalfe House, Delhi-110054

Contact number: 011-23902530, 31 E-mail: director@desidoc.drdo.in, itconf2015@gmail.com

Language of paper and presentation : Hindi or English

Fees: For Participants: Rs 1000

For Paper Contributors, whose papers are selected for presentation: Nil

For more details please refer http://itytt.drdo.res.in

आलेख की भाषा: आलेख हिन्दी एवं अंग्रेजी में स्वीकार्य है।

आलेख प्रस्तुति का माध्यम: हिन्दी अथवा अंग्रेजी।

सम्मेलन शुल्क: प्रतिभागियों के लिए 1000 रुपये।

शोध पत्र प्रदाताओं के लिए कोई शुल्क नहीं, यदि उनका आलेख प्रस्तुति हेतु चयनित किया जाता है।

कृपया अधिक जानकारी के लिए **http://itytt.drdo.res.in** देखें।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

सम्पदा प्रबंधन इकाई में स्वच्छता अभियान

सम्पदा प्रबंधन इकाई (ई एम यू), दिल्ली में 25 सितम्बर 2014 से 02 अक्टूबर 2014 तक स्वच्छता अभियान चलाया गया, जिसमें सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए सम्पदा प्रबंधक, कर्नल डी के शर्मा ने 'स्वच्छ भारत' अभियान का महत्त्व बताया तथा सभी से अपने कार्यस्थल, आवासीय परिसर तथा सार्वजनिक स्थानों की साफ–सफाई में योगदान देने को कहा। उन्होंने बताया कि सिर्फ कुछ दिनों की सफाई से ही हमारा देश स्वच्छ नहीं हो जाएगा, बल्कि इसके लिए हमें अनवरत प्रयास करने होंगे। सम्पदा प्रबंधक ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ सम्पदा प्रबंधन इकाई में स्वयं झाड़ू लगाकर स्वच्छता अभियान का शुभारम्भ किया। जिसके अन्तर्गत डॉ सरोज, को आफिसर्स ट्रांजिट फैसिलिटी, ड्रोमी, महिला कल्याण मंच व कोठारी डे केयर सेंटर, श्री राजीव कुमार को अनुसंधान विहार, श्री एस. गणपति रामन को ई एम यू, आर ए सी गेस्ट हाउस और आवासीय परिसर, श्री अरूण कुमार को आवासीय परिसर के सभी उद्यान, श्री वि. सोमय्या को सभी भंडार कक्ष, श्री अनिल त्रिपाठी को व्यायामशाला, खेल–कूद परिसर व नाग चौधरी आवास, श्रीमती सुनीता रामानी को रमन और भगवंतम आवास, श्रीमती राजकुमारी को कोठारी आवास और विपणन संकुल क्षेत्र, श्री के रमेश को एन जी ओ टी एफ और नए व पुराने टाइप II और III, श्री विकास को सेवा अधिकारी फ्लैट, सुबेदार एल. चंद्रकांत को डवलपमेंट एन्कलेव क्षेत्र रख–रखाव, नायब सुबेदार ए वि एस राव को जे सी ओ/ओ आर आवास, हवलदार बी. आर. चौहान को मेटकॉफ हाउस, सिपाही ए के राय को सभी भवनों के छत, श्री रमेश चंद को एम टी गैराज, गाड़ी स्थान, श्री ब्रिज मोहन को एम टी गैराज, गाड़ी स्थान की सफाई की जिम्मेदारी सौंपी गई, जिसमें सभी ने पूरा योगदान दिया।

सम्पदा प्रबंधन इकाई में स्वच्छता अभियान का एक दृश्य।

02 अक्टूबर (गांधी जयंती) को प्रातः 10 बजे सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई तथा इसी दिन इकाई के सभी कमरों व वाहनों की सफाई करके पूजा की गई।

डी एल आर एल द्वारा आई एस ओ 2008:9001 का पुनर्प्रमाणन

रक्षा इलैक्ट्रोनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल डी आर), हैदराबाद ने आई एस ओ 9001:2008 के प्रमाणन को तीन वर्ष की अवधि अर्थात 01 सितंबर 2017 तक के लिए आगे बढ़ाने की सिफारिश की है। सक्षम प्रमाणीकरण संस्था ने रक्षा इलैक्ट्रोनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल डी आर) की गतिविधियों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप पाया।

प्रमाणन संस्था के सदस्य डी एल आर एल वैज्ञानिकों से चर्चा करते हुए।

पुरस्कार

डॉ वी एम घाटके पुरस्कार

भारतीय वैमानिकी सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केन्द्र (सेमीलेक), बैंगलूरू के श्री पी रामबाबू, वैज्ञानिक ई को अस्त्र एयरबोर्न प्रक्षेपास्त्र के महत्त्वपूर्ण एयरफ्रेम घटकों के सफल विकास, प्रमाणीकरण, उत्पादन और अन्तिम उड़न योग्य निकासी के लिए डॉ वी एम घाटके पुरस्कार 2013 से सम्मानित किया गया। पुरस्कार में 20000 रुपये की नकद राशि भी शामिल है।

प्रौद्योगिकी नवाचार के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार

रसायन और उर्बरक मंत्रालय, भारत सरकार ने गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना, बैंगलूरू के डॉ राजीव जैन और नेशनल एयरोस्पेस लेबोरेट्रीज, बैंगलूरू की डॉ अंजना जैन और श्री पी सुब्बाराव की टीम को उनकी पॉली–वैनीलीडीन कम्पोजिट फिल्म (Poly-Vinylidene Composit Film) के औद्योगिक कार्य के विकास और उसके प्रदर्शन के लिए माइक्रो एयर वाहन के फलेपिंग माइलर विंग के एक प्रर्वतक के रूप में प्रौद्योगिकी नवाचार 2013–14 के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं पर विशेषांक

डी आर डी ओ समाचार के माध्यम से जनमानस/सरकारी संस्थानों/वैज्ञानिक संस्थानों/विभिन्न विश्वविद्यालयों को डी आर डी ओ के विषय में अधिक जागरूक करने के संबंध में डी आर डी ओ की सभी प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं पर विशेषांक प्रकाषित करने का प्रस्ताव है। इससे डी आर डी ओ की प्रयोगशालााओं/स्थापनाओं के बारे में अधिक एवं सही सूचना का प्रसार होगा, जिससे डी आर डी ओ की प्रयोगशालााओं/स्थापनाओं में हो रहे विभिन्न रक्षा एवं जनोपयोगी अनुसंधानों के विषय में सही परिप्रेक्ष्य में जानकारी उपलब्ध करायी जा सकेगी। इस कड़ी में आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे ; रक्षा प्रयोगषाला (डी एल), जोधपुर ; रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली ; तथा वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर पर विशेषांक प्रकाशित किये जा चुके हैं।

कृपया विशेषांक हेतु अपनी प्रयोगशालााओं/स्थापनाओं के विभिन्न गतिविधियों से संबंधित उत्तम चित्र तथा सामग्री यथाशीघ्र भेजें। इसे हम आगामी अंकों में प्रकाशित करने का भरसक प्रयास करेंगे।

पाठकों की राय

आपकी राय हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी तथा सूचनाप्रद बनाने तथा संगठन को बेहतर रूप में अपनी सेवा उपलब्ध कराने के अवसर प्राप्त होते हैं। डी आर डी ओ समाचार अपने सम्मानित पाठकों से प्रकाशित सामग्रियों तथा विषयों की गुणवत्ता के बारे में अपने सुझाव प्रेषित करने का अनुरोध करता है। कृपया अपने सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें:

संपादक, डी आर डी ओ समाचार, रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), मेटकॉफ हाउस, दिल्ली–110054 **ई-मेल : director@desidoc.drdo.in**

लेह में लद्दाखी किसान–जवान विज्ञान मेला

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह द्वारा 9–10 अगस्त, 2014 को लेह में 21वां लद्दाखी किसान–जवान विज्ञान मेले का आयोजन किया गया। यह मेला रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) में विकसित प्रौद्योगिकियों के प्रसार के लिए वैज्ञानिकों, सैनिकों और स्थानीय किसानों के बीच बातचीत के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करता है।

श्री आर के गुप्ता, मेले का उद्घाटन करते हुए।

डी पी आई, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय के निदेशक, श्री आर के गुप्ता ने मेले का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में से उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) के निदेशक, डॉ आर बी श्रीवास्तव एवं शेर–ए–कश्मीर कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, श्रीनगर के सह निदेशक भी मौजूद थे। 10000 से अधिक स्थानीय लोगों, सैनिकों और स्कूली बच्चों की सभा को संबोधित करते हुए डॉ आर बी श्रीवास्तव ने रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) की सफलताओं पर प्रकाश डाला।

डॉ श्रीवास्तव, स्वागत सम्बोधन देते हुए।

श्री आर के गुप्ता ने कृषि पशु प्रौद्योगिकियों के माध्यम से सैनिकों के समर्थन के लिए रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) के प्रयासों की सराहना की।

डॉ सलीम मीर ने कृषि क्षेत्र में पिछले 30 वर्षों से लेह लद्दाख में रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) के योगदान की सराहना की। समापन समारोह में लद्दाख स्वायत पर्वतीय विकास परिषद के कार्यकारी पार्षद मुख्य अतिथि श्री सोनम दोरजे ने ग्रामीण विकास और लेह लद्दाख के सभी सामाजिक–आर्थिक विकास पर निर्णय लेने में रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) के योगदान का उल्लेख किया। यह मेला सशस्त्र बलों, स्थानीय लोगों विशेषकर किसानों और रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) के वैज्ञानिकों के बीच अद्वितीय तालमेल का प्रतीक बन गया है। लद्दाख के विभिन्न भागों से 20000 से अधिक स्थानीय किसानों, गैर सरकारी संगठनों, उद्योगपतियों, अर्धसैनिक बलों और छात्रों ने मेले का भ्रमण किया।

कार्मिक समाचार

नियुक्तियां

रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (आई आर डी ई),देहरादून

उत्कृष्ट वैज्ञानिक, डॉ एस एस नेगी ने 1 सितम्बर, 2014 के प्रभाव से यंत्र अनुसंधान एवं विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून में निदेशक के रूप में पद ग्रहण किया। डॉ नेगी ने सन् 1979 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली से एप्लाइड ऑप्टिक्स में एम टेक की डिग्री प्राप्त की और सन् 2000 में एच एन बी गढ़वाल विश्वविद्यालय से सेमीकन्डक्टर उपकरणों पर पी एच डी की उपाधि प्राप्त की है। वह 1980 में बी वैज्ञानिक के रूप में यंत्र अनुसंधान एवं विकास स्थापना (आई आर डी ई) में नियुक्त हो गये।

डॉ नेगी को अभिकल्पन तथा विकास, एकीकरण, उपयोगकर्ता परीक्षणों और इलैक्ट्रो–ऑप्टीकल उपकरणों की तकनीक (थर्मल इमेजर, सी सी डी कैमरा, एल आर एफ/लेजर डेजिग्नेटर) आदि के हस्तांतरण का व्यापक ज्ञान और अनुभव हैं जिन्हें स्टैंडअलोन निगरानी उपकरणों में या विभिन्न प्लेटफार्मों के लिए इलैक्ट्रो ऑप्टिकल फायर कन्ट्रोल प्रणाली के एक भाग के रूप में विन्यस्त किया जा सकता है। डॉ नेगी ने तीन दशकों से अधिक अपने कैरियर के दौरान वैज्ञानिकों की एक समर्पित टीम के साथ थर्मल इमेजिंग तकनीक को विकसित किया है। गैप मेजरिंग डिवाइस एम के II, इंटीग्रेटड मल्टी फंक्शन साइट, बख्तरबंद लड़ाकू वाहनों (टी–90, बी एम पी, टी–72 टैंक) के लिए कमांडर थर्मल इमेजर, हल्के लेजर लक्ष्य डेजिग्नेटर (एल एल टी डी) के लिए थर्मल इमेजर और हैल्मेट माउंटड थर्मल इमेजर (एच एम टी आई) जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजनाएँ उनके नेतृत्व में पूरी हुई थी। इन उपकरणों ने विभिन्न प्रकार के चरणों में लगभग 4500 करोड़ रुपये का व्यापार पैदा किया। उन्होंने बारीकी से सशस्त्र बलों में उपकरणों को समय पर शामिल करने के लिए उपयोगकर्ताओं और उत्पादन एजेन्सियों के साथ विचार–विमर्श किया। इसके अलावा उन्होंने छोटे हथियारों और टैंक चालकों के लिए छवि गहनता तकनीकी आधारित स्थलों के विकास में शामिल डिजाइन टीम का निर्देशन भी किया है।

डॉ नेगी ने सयुंक्त सहयोग के लिए क्षेत्रों की पहचान करने में ब्रिटेन, फ्रांस और इजरायल दौरे के दौरान रक्षा प्रतिनिधिमंडलों में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन का प्रतिनिधित्व किया है और भारत–इजरायल प्रंबधन परिषद के तहत थर्मल इमेजिंग के क्षेत्र में पथप्रदर्शन किया है। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में 20 से ज्यादा आलेख प्रकाशित किये हैं और वह भारतीय ऑप्टिकल सोसायटी, भारतीय उपकरण सोसायटी और भारतीय सेमीकंडक्टर सोसायटी के आजीवन सदस्य भी हैं। वह तीसरी पीढ़ी थर्मल इमेजर्स के विकास के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन अग्नि पुरस्कार और प्रौद्यौगिकी समूह पुरस्कार के प्राप्तकर्ता भी हैं।

उच्च अर्हता प्राप्ति

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद

श्री सारिका श्रीनिवास कल्याण कमल, वैज्ञानिक डी, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), खड़गपुर द्वारा सिंथेसिस एंड करेक्ट्राइजेशन ऑफ सरफेस मोडीफाइड कोबाल्ट एंड कोबाल्ट एल्योज ऑफ कोर–शेल नानोस्ट्रक्चर नामक उनके शोध प्रबंध पर पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

खेलकूद गतिविधियां

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरू

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरू ने फुटबाल स्टेडियम, बैंगलूरू में इलैक्ट्रॉनिक्स निरीक्षण नियंत्रालय (सी आई एल) के खिलाफ अत्यंत रोचक मुकाबले में बी डी एफ ए सुपर डिवीजन जार्ज हॉवर कप जीता। उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई) के निदेशक, श्री पी श्रीकुमार ने खिलाड़ियों को बधाई दी और सम्मान कार्यक्रम के दौरान प्रत्येक सदस्य को प्रमाण–पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए अपनी खुशी जाहिर की।

श्री पी श्रीकुमार, निदेशक ए डी ई तथा जार्ज होवर कप के साथ विजेता टीम।

डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरू

श्री पी श्रीकुमार, निदेशक, ए डी ई एवं श्री वी एस चन्द्रशेखर, सह निदेशक ए डी ई के साथ चर्चा करते हुए एयर वाइस मार्शल राजीव होरा।

01 अगस्त 2014 : विमान तथा प्रणाली परीक्षण स्थापना (ए एस टी ई), बैंगलूरू के कमान एयर वाइस मार्शल राजीव होरा। उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा वैमानिकी विकास स्थापना के निदेशक, श्री पी श्रीकुमार ने अतिथि का स्वागत किया एवं वैमानिकी विकास स्थापना की गतिविधियों की जानकारी दी। चल रहीं परियोजनाओं पर एयर वाइस मार्शल होरा ने संबंधित टीमों के साथ चर्चा की। उन्होंने वैमानिकी विकास स्थापना में उपलब्ध सुविधाओं और सिमुलेटर का निरीक्षण भी किया।

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल) जोधपुर

27 अगस्त, 2014 : कोमोडोर विवेक चावला की अध्यक्षता में एच डी एम सी 10 कोर्स (12 कोर जोन) के 22 सर्विस अधिकारियो का एक दल। छद्मावरण के क्षेत्र में परमाणु विकरण प्रबंधन और अनुप्रयोगों आदि में की चल रही गतिविधियों के बारे में आगंतुकों को अवगत कराया गया।

श्री आर पी अग्रवाल, भारतीय प्रशासनिक सेवा (सेवानिवृत) अध्यक्ष प्रबंधन बोर्ड, दिल्ली तकनीकी विश्वविद्यालय और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जोधपुर के निदेशक, प्रो सी वी आर मूर्ति ने 4 अगस्त 2014 को रक्षा प्रयोगशाला का दौरा किया। आगंतुकों को प्रयोगशाला की विभिन्न तकनीकी सुविधाओं और तकनीकी गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गयी।

ISSN 0971-4405

रक्षा इलैक्ट्रोनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद

13 अगस्त, 2014 : वाइस एडमिरल आर के पटनायक, अति विशिष्ट सेवा मेडल, युद्ध सेवा मेडल, नौसेना स्टाफ के उप प्रमुख। विशिष्ट वैज्ञानिक तथा डी एल आर एल के निदेशक, श्री एस पी दास ने डी एल आर एल, हैदराबाद की इलैक्ट्रॉनिक युद्ध परियोजनाओं और प्रौद्योगिकी के विकास की गतिविधियों के बारे में आगंतुकों को अवगत कराया।

श्री दास, परियोजना गतिविधियों की जानकारी देते हुए।

रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली

04–08 अगस्त, 2014 : प्रो बी के मदाहर, प्राचार्य टैक्नोलोजिस्ट, सूचना प्रबंधन विभाग, रक्षा विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (डी एस टी एल), ब्रिटेन के नेतृत्व में एक पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल। यह दौरा क्षेत्रीय सैन्य अभियानों में सांस्कृतिक अनुकूलन (मेल) पर रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर)–रक्षा विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (डी एस टी एल) सहयोगात्मक परियोजना से संबंधित था।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

निदेशक, डी आई पी आर के साथ डी एस टी एल प्रतिनिधिमंडल।

मुख्य सम्पादक
सुरेश कुमार जिंदल

सह मुख्य सम्पादक
बी नित्यानंद

सम्पादक
फूलदीप कुमार

सहायक सम्पादक
अशोक कुमार
दीप्ती अरोड़ा

सम्पादकीय सहायक
शालिनी छाबड़ा
संजय कटारे

मुद्रण
एस के गुप्ता
हंस कुमार

विपणन
आर पी सिंह

श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित
प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23813465 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in